फरीदाबाद

मजदूर समाचार

दुनियां को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा

नई सीरीज नम्बर 74 अगस्त 1994

इस अंक में

- फोर्ड ट्रैक्टर
- पहचान की राजनीति
- झालानी टूल्स
- मौना देवी
- मीनाक्षी डाइंग एन्ड प्रिंटिंग
- साइन्स एवं टेक्नोलॉजी

दक्षिण कोरिया और बम्बई

I. दक्षिण कोरिया में रेलवे और मेट्रो रेल वरकरों ने वेतन वृद्धि तथा काम के घन्टे घटाने के लिये हड़ताल करने का फैसला किया। स्ट्राइक आरम्भ होने से पहले ही सरकार ने उसे गैरकानूनी घोषित कर दिया और स्ट्राइक नहीं होने देने के लिये गिरफ्तारियाँ शुरू की। रेलवे मजदूरों ने गिरफ्तार लोगों की रिहाई के लिये हड़ताल कर दी। अन्डरग्राउन्ड रेल वरकर स्ट्राइक में शामिल हो गये। रेल और मेट्रो रेल यातायात ठप्प हुये जब 4 दिन हो गये तब 29 जून को सात हजार हथियारबन्द पुलिस ने कई जगहों पर छापे मार कर सैंकड़ों हड़ताली मजदूरों और उनके समर्थकों को गिरफ्तार किया। जून माह में रेलवे वरकरों ने न्यू यार्क, पेरिस और लन्दन में भी हड़तालें की हैं।

समुद्री जहाजों की प्रमुख निर्माता ह्यून्दाई हैवी इन्डस्ट्रीज में मजदूरों ने वेतन वृद्धि के लिये हड़ताल की हुई है। 29 जुलाई को 3000 हड़ताली मजदूरों ने शिपयार्ड के मेन गेट पर अवरोधों को तोड़ कर अन्दर जाने की कोशिश की तब मजदूरों और सेक्यूरिटी गार्डों में जम कर संघर्ष हुआ।

II. भारत में लिफ्टों के निर्माण व स्थापना में अग्रणी ओटिस एलिवेटर्स विश्व मंडी में एक प्रमुख खिलाड़ी युनाइटेड टेक्नोलाजीज कारपोरेशन का हिस्सा है। ओटिस की बम्बई स्थित फैक्ट्री में 900 मजदूर हैं और 800 वरकरों का फील्ड स्टाफ लिफ्टों को लगाने व उनकी मेन्टेनेन्स का काम करता है।

अब तक यहां लिफ्ट मार्केट में ओटिस का एकछत्र-सा राज रहा है पर इधर विश्व मंडी की एक अन्य प्रमुख हस्ती, मित्सुबिशी कम्पनी ने यहां प्रवेश किया है और ओटिस को कड़ी टक्कर देने लगी है। मंडी की इस होड़ में अपनी शक्ति बढ़ाने के लिये ओटिस मैनेजमेंट वरकरों को अधिक निचोड़ने के लिये कदम उठा रही है।

1991 में नई एग्रीमेंट के लिये डिमान्ड नोटिस के जवाब में ओटिस मैनेजमेंट ने अपनी ओर से 50 पाइन्ट वाला चार्टर पेश किया। हर काम को ठेकेदारों को देने, जिस विभाग को चाहे उसे बन्द करने, सबसे युवा और चुस्त-दुरुस्त वरकर अधिकतम जितना काम कर सकता है वह सब मजदूरों के लिये निर्धारित करने आदि-आदि के अधिकारों पर मोहर लगवाने के लिये मैनेजमेंट ने चार्टर पेश किया था। वरकरों ने चार्टर ठुकरा दिया। मैनेजमेंट ने मजदूरों को परेशान करना शुरू कर दिया। ट्रान्सफर किये गये और वेतन काटे गये – कुछ वरकरों को लगातार 4 महीनों तक वेतन में 40-50 रुपये प्रतिमाह दिये गये। इससे बात नहीं बनने पर मैनेजमेंट ने शिव सेना की यूनियन खड़ी की और दिसम्बर 93 में उसके साथ एग्रीमेंट की। आतंक से फैक्ट्री वरकरों ने कुछ समय के लिये उस एग्रीमेंट को माना पर फील्ड वरकर टस से मस नहीं हुये।

शिव सेना के त्रिशूल से काम नहीं बनने पर ओटिस मैनेजमेंट ने लॉक आउट का रामबाण चलाया। फील्ड वरकरों पर तोड़-फोड़ के आरोप मढ़ कर 6 मई 93 को मैनेजमेंट ने तालाबन्दी कर दी और लिफ्टें लगाने का काम ठेकेदारों को सौंप दिया।

ओटिस का जनरल मैनेजर रिटायर्ड उच्च पुलिस अधिकारी है। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री का जमाई अमरीका में ओटिस की पेरेन्ट कम्पनी में अफसर है और समधी ओटिस की संचालक महिन्द्रा एन्ड महिन्द्रा में डायरेक्टर रहा है। सरकारी शक्ति वाला ब्रह्मास्त्र...

सरकारी मशीनरी भूखे भेड़ियों की तरह ओटिस मजदूरों पर टूट पड़ी। पुलिस ने 150 मजदूरों को ऐसे आरोप लगा कर गिरफ्तार किया कि उनकी जमानत नहीं हो सकती। 31 मई को 200 मजदूरों का जलूस एक वरकर को यातना देने के विरोध में कफे परेड थाने गया। थाने में मजदूर विरोध-पत्र दे ही रहे थे कि पुलिस उपायुक्त वहां पहुँचा। साहब ने थाने के दरवाजे बन्द करने का हुकम दिया। घेर लिये गये मजदूरों पर 100 हथियारबन्द पुलिस वाले टूट पड़े। किसी मजदूर का सिर फूटा तो किसी का हाथ-पैर टूटा। फिर साहब ने मजदूरों को लेक्चर पिलाया, "बम्बई पुलिस के खिलाफ विरोध प्रकट करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई ! तुम हिन्दुस्तान के नागरिक हो या पाकिस्तान के?"

नौकरी छूटने के डर, मैनेजमेंट के आतंक, शिव सेना की गुन्डागर्दी, तालाबन्दी और पुलिस बर्बरता के बावजूद ओटिस फील्ड वरकर डटे हैं। मजदूरों के हौसले बुलन्द हैं और वे रेगुलर मीटिंगें कर रहे हैं। अधिक महत्वपूर्ण है ओटिस वरकरों को बम्बई के अन्य मजदूरों से मिल रहा समर्थन।

(जानकारी हमने 'दी वॉयस ऑफ पीपल अवेकनिंग' के जून 94 अंक से ली है।)

फौज का हमला

भारतीय फौज ने बिहार के पलामु और गुमला जिलों में 245 गांवों की घेराबन्दी कर ली है। सवा दो लाख लोग फौज से मुकाबले में डटे हैं। 23वीं तोपखाना बटालियन के लिये फायरिंग रेंज के वास्ते1471 वर्ग किलोमीटर जगह की निशानदेही कर दी गई है। सरकार ने जमीन पर कब्जे के लिये फायरिंग रेंज कानून पास किया है। हमले की गुप्त योजना बना कर जब पहला गोला दागा गया तब लोगों को पता चला कि उनके गाँवों को मटियामेट करके वहाँ तोपों में महारत हासिल करने की ट्रेनिंग दी जायेगी। मोर्चाबन्दी में एक तरफ सवा दो लाख नागरिक खड़े हैं तो दूसरी ओर बिहार पुलिस व भारतीय फौज।

पाकिस्तानी फौज सिन्ध प्रान्त में गाँवों को घेर कर बागी नागरिकों से लोहा ले रही है। कराची में गली-मोहल्लों में नागरिकों ने फौज के खिलाफ मोर्चे लड़े हैं। फ्रंटियर प्रान्त में पाकिस्तानी फौज नागरिकों को निहत्था करने में तबसे लगी है जबसे भारतीय फौज नागालैन्ड में नागरिकों को निहत्था कर रही है।

चीनी फौज ने नागरिकों को कड़ती गोली खिलाने के लिये राजधानी में टैंक और बख्तरबन्द गाड़ियों की मीलों लम्बी कतार खड़ी करके विश्व शोहरत हासिल की है।

अपनी मारक शक्ति बढ़ाने के लिये फौजें ट्रेनिंग के साथ-साथ घातक हथियारों की खोज और उनकी टैस्टिंग करती रहती हैं। भारतीय फौज अग्नि, पृथ्वी, नाग मिसाइलों के परीक्षण के लिये उड़िसा में बलियापाल क्षेत्र से हजारों नागरिकों को बेदखल करने के लिये उनसे छापामार युद्ध कर रही है। अमरीकी फौज ने नये रासायनिक हथियारों की घातकता बढ़ाने के लिये प्रयोगों के दौरान अमरीकी नागरिकों में एड्स की बीमारी के बीज बोये। अमरीकी फौज ने, रूसी फौज ने एटमी हथियारों की नई-नई फसलें उगाने के लिये नागरिकों पर जानलेवा गुप्त प्रयोग व परीक्षण किये।

एक देश में एक ही फौज की परम्परा जब टूट जाती है तब शान्ति का परचम फहराती कई देशों की फौजें वहां घेराबन्दी करके परम्परा की पुनर्स्थापना के लिये अश्वमेध यज्ञ करती हैं। सोमालिया में अमरीकी फौज, पाकिस्तानी फौज, भारतीय फौज संयुक्त कमान स्थापित करती हैं। अमरीकी फौजियों के मारे जाने पर पाकिस्तानी फौज सोमालिया के नागरिकों को भूनती है और पाकिस्तानी फौज के खिलाफ सोमाली नागरिकों की नफरत को भारतीय फौज ठन्डा करती है।

वैसे बचपन से सुनते आ रहे हैं कि फौज का काम नागरिकों के जीवन व घरबार की सुरक्षा करना है।

मजदूरों द्वारा अपने अनुभवों और विचारों को प्रस्तुत करने के लिये लिखे लेखों और रिपोर्टों को हम इस पन्ने पर छापेंगे। ऐसे लेख और रिपोर्ट हमारे लिये खुशी की चीज हैं। अपनी बात हमें लिख कर दें। आपको अपनी बातें छपवाने के लिये कोई पैसे खर्च नहीं करने पड़ेंगे।

मौना देवी

मेरा नाम मौन्ना है। आयु लगभग 37 वर्ष की है। लगती सत्तर की हूँ। दादी व नानी बन चुकी हूँ। वास्तव में यह उम्र तो अपनी शादी की ही होती है।

जब मैं पांचवीं में पढ़ती थी, अपनी कक्षा में प्रथम आती थी। दादा जी गांव के सरपंच थे। हजारों मन कनक होती थी। पांच-दस भैंसें व दो तगड़े बैल थे। चाचा जी अभी ट्रैक्टर ले आए थे।

सबसे बड़ी सन्तान और वह भी लड़की होने के नाते माता जी ने मुझे स्कूल छोड़ने का आदेश दे दिया।

बचपन में लाड़-प्यार से मुझे मुन्नी कहा जाता था। ग्यारह वर्ष की अवस्था से पन्द्रह वर्ष की अवस्था तक चौदह-चौदह घन्टे घर व खेत का काम किया। जो कुछ पढ़ा था सभी भूल गया।

अब मेरे पति कहते हैं कि बचपन की कच्ची उम्र में इतना शारीरिक श्रम शारीरिक विकास में बाधा डालता है।

बाधा तो तब आई जब सोलह की अवस्था में एक शिक्षित बेरोजगार के साथ विवाह कर दिया गया।

बीस वर्ष की अवस्था होते-होते उन्होंने मुझे चार बच्चों की माँ बना दिया।

मेरी सास कुपोषण व अधिक सन्तान उत्पादन के अतिरिक्त दिन में अठारह-अठारह घन्टे काम की चपेट में आकर 45 वर्ष की होते ही गर्भ कैंसर से स्वर्ग सिधार गई। ठीक यही कहानी मेरी जेठानी की हुई।

अब मैं भी लगता है उसी अवस्था से न गुजर जाऊँ। ऐसा भी लगता है कि अन्तिम साँस तक अठारह-अठारह घन्टे वाला श्रम चलता ही रहेगा।

प्रातः चार बजे उठना, घर की सफाई व पशुओं की चराई के पश्चात् बच्चों के लिए खाना-नाश्ता तैयार करना। सभी के कपड़े धोना। पानी लाना, लकड़ी लाना तथा अनेकों घरेलु काम करके खेतों में जाना व घास खोद कर लाना। उसे फिर काटना, चराना, दूध निकालना, गर्म करना, जमाना, बिलोना आदि सभी कार्य। ऊपर से बच्चों की परेशानी, पति की परेशानी, पड़ोसियों व रिश्तेदारों की परेशानी।

उपरोक्त धन्धों के अतिरिक्त शरीर में आई अनेकों बीमारियों से लड़ना।

फ.म.स. के जुलाई अंक की 'कही-सुनी-देखी' को पढ़ कर मैंने भी अपनी कहानी लिखनी उचित समझी। उम्मीद है यह लाखों-करोड़ों महिलाओं की दास्तान होगी।

24.7.94 – – मौना देवी

साइन्स एवं टेक्नोलॉजी

साइन्स एवं टेक्नोलॉजी संचित श्रम (मृत श्रम) के रूप हैं। मृत श्रम शारीरिक एवं मानसिक कौशल तथा भौतिक साधनों के रूप में सजीव श्रम को उत्पादक/अधिक उत्पादक बनाने की क्षमता रखता है। मौसम एवं बाढ़ की जानकारी, खेती के लिए साफ किए गए मैदान तथा फसलें उगाने व उनकी बेहतर नस्लें तैयार करने की कला, सभी मृत श्रम हैं। मजदूर, गुलाम, किसान, दस्तकार आदि सजीव श्रम के विभिन्न नमूने हैं।

मृत श्रम सजीव श्रम को कई गुणा उत्पादक बना सकता है और मृत श्रम में वृद्धि के साथ ही साथ यह क्षमता भी बढ़ती रहती है। इसलिए मृत श्रम पर किसका कंट्रोल है, उसका प्रयोग किस लिए हो रहा है, यह अत्याधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्था में मृत श्रम पर मेहनतकशों का नियंत्रण नहीं होता, बल्कि उस पर शोषकों का कंट्रोल होता है। इसीलिए गैर बराबरी वाली समाज व्यवस्था में सजीव श्रम और मृत श्रम के बीच विरोधात्मक रिश्ता होता है। लगभग पाँच हजार साल पहले असमानता वाले समाज पनपे और लगातार बढ़े। ऐसे समाज में मृत श्रम का प्रयोग कंट्रोल एवं विनाश के साधनों पर तथा सजीव श्रम से अधिक से अधिक उत्पादन लेने के लिए होता आया है। सजीव श्रम की जीवन स्थिति में सुधार मृत श्रम के प्रयोग का उद्देश्य नहीं रहा है। पर कभी-कभार ऐसे नतीजे सामने जरूर आ जाते हैं।

सोलहवीं शताब्दी के पश्चात से मृत श्रम की मात्रा और गति में वृद्धि से उत्पादकता ने छलांग ली। इससे मृत श्रम में और तेजी से वृद्धि हुई। इसी दौरान साइन्स और टेक्नोलॉजी में तेजी से विकास हुआ। मृत श्रम और सजीव श्रम में आपसी विरोध के रिश्ते होने की वजह से साइन्स और टेक्नोलॉजी का मकसद काम करने वालों के बेहतर जीवन नहीं रहा है। साइन्स-टेक्नोलॉजी का मुख्य उद्देश्य कन्ट्रोल एवं विनाश के साधनों का निर्माण और मजदूरों से अधिकाधिक काम लेना रहा है। न केवल मृत श्रम का प्रयोग इन उद्देश्यों के लिए हुआ है बल्कि मृत श्रम का विकास किस दिशा में होगा, यह भी इन्हीं उद्देश्यों से तय होता है।

किस प्रकार की खोज की जानी चाहिए, कैसे आविष्कारों को प्रोत्साहन मिलेगा, किस रिसर्च को प्राथमिकता दी जाए, कैसी विद्या के प्रसार को सहायता दी जाए, समाज-शास्त्री किन सवालों के हल ढूँढेंगे – यह सब भिन्न होगा अगर सजीव श्रम मृत श्रम का प्रयोग कैसे होगा, यह तय कर सकेगा। अगर सजीव श्रम और मृत श्रम के रिश्ते उल्ट दिए जाएँ तो टेक्नोलॉजी का प्रयोग एंव विकास – दोनों वर्तमानसे बहुत भिन्न होंगे। मजदूर नहीं चाहेंगे कि टेक्नोलॉजी का ऐसा प्रयोग हो कि उन्हें पेट भरने के लिए दस की बजाए बारह घंटे काम करना पड़े या भूखे मरने की नौबत आ जाए। न ही ऐसी टेक्नोलॉजी के विकास के लिए कोई काम करने को राजी होगा जिससे काम करने वालों पर कंट्रोल और प्रभावी किया जा सके।

अन्य मृत श्रम की भांति ही, साइन्स-टेक्नोलॉजी का सजीव श्रम के लिए सदुपयोग या दुरूपयोग निर्भर करता है – सजीव श्रम और मृत श्रम के आपसी रिश्तों पर। 31.07.94 – – अमित

थैली खर्च – कौड़ी की बचत

एन एच 4 में लाखों रुपये लगा कर बड़े-बड़े आफिस खोले गये हैं तथा सरकारी कर्मचारियों के लिए हजारों क्वार्टर्स बनाये गये हैं। मार्केट भी बनाई गई है और बस का अड्डा भी बनाया गया है। लेकिन बस अड्डे पर वर्षा से इतना पानी इक्ट्ठा हो जाता है कि वह कई-कई दिन तक परेशानी का कारण बना हुआ है। बस में चढ़ना मुश्किल है। पानी के निकास के लिये कोई इन्तजाम नहीं है। मार्केट के पिछली ओर की दुकानों के सामने पानी का समुन्दर दिखाई देता है। किसी भी दुकान पर अर्थात् राशन की दुकान पर जाने के लिये पानी में से गुजरना पड़ता है। सैन्ट्रल गवर्नमेन्ट से प्रार्थना है कि पानी के निकास के लिये शीघ्र ध्यान दे। – डॉक्टर आर.के. डोगरा

कही-सुनी-देखी

★ **ईस्ट इंडिया पावरलूम वरकर** ने कहा, "लन्च में फैक्ट्री से बाहर पार्कों में थोड़ा सुस्ता लेते थे पर इधर दो-तीन महीनों से एक्सपोर्ट डिवीजन वालों ने कपड़े सुखाने के लिये दोनों पार्कों को घेर लिया है। जमीन पर कपड़े फैले रहते हैं और रस्सियों पर भी टँगे रहते हैं। फूल तो क्या इससे घास भी सूख गई है। पार्कों की जगह कम्पनी की नहीं है।"

★ **बाटा वरकर** से सुना : "गाँव से नौकरी के लिये जब मैं फरीदाबाद आ रहा था तब गाड़ी से मैंने दूर-दूर तक झोंपड़ियाँ देखी और सोचा कि यहाँ तो बहुत मंगते बसते हैं। किराये के कमरे में रह रहे अपने गाँव के नजदीक के एक आदमी के पास मैं रूका था। एक दिन एक जान-पहचान वाले ने कहा कि चलो तुम्हें आटोपिन झुग्गियों में अपनी जगह दिखा लाऊँ। उसके साथ मैंने देखा कि जिन्हें मैं मंगतों की झोंपड़ी समझता था उनमें तो फैक्ट्रियों में काम कर रहे मजदूर रहते हैं। मुझे बाटा फैक्ट्री में काम करते 13 साल हो गये हैं और अब मैं खुद आटोपिन झुग्गियों में रहता हूँ।"

★ **कैजुअल वरकरों** को फोर्ड प्लान्ट में काम करने जाने से 11 जुलाई को यूनियन लीडरों ने रोक दिया। शाम की शिफ्ट के लिये चार से साढे चार तक परमानेन्ट वरकर फैक्ट्री में जाते और कैजुअलों को पहचान-पहचान कर, चेतावनी-सलाह-धमकी दे कर गेट से वापस किया जाता देखा गया। मैनेजमेंट पर दबाव डालने के नाम पर उठाये गये मजदूरों के बीच फूट डालने वाले इस कदम ने परमानेन्ट और कैजुअल वरकरों के बीच की खाई को और चौड़ा किया। गेट से लौटाये गये कैजुअल वरकर सड़क पार झुन्ड में दुखी और चिन्तित देखे गये। 16 फैक्ट्रियों में कैजुअल वरकर के तौर पर काम कर चुके एक वरकर को दबी जुबान में कहते सुना : "काम कैजुअलों से ज्यादा करवाया जाता है और लफड़ा होने पर हम पर पहली चोट की जाती है। कभी मैनेजमेंटें कैजुअलों को निकाल देती हैं तो कभी लीडर हमें गेट पर रोक देते हैं। सिफारिशों के बाद मुश्किल से फोर्ड में दो महीनों के लिये काम मिला था और अब इसमें यह लफड़ा हो गया। खर्चा कैसे चलेगा? क्या ऐसा कदम नहीं उठाया जा सकता था जिसमें कैजुअलों को नुकसान नहीं हो?"

★ **नार्वे** से यहाँ घूमने आई एक नर्स से सुना : "चौराहे पर खड़े हम कुछ मित्र रात के समय आपस में बातचीत कर रहे थे। पुलिस की जीप आई और हमें वहाँ से जाने को कहा। कारण पूछने पर पुलिस हमें थाने ले गई और वहाँ नाम-पता पूछ कर हमें छोड़ दिया। एक दिन अचानक हमें अदालत में हाजिर होने का हुकम मिला। जज ने यह कह कर हम पर जुर्माना लगाया कि नागरिकों ने कोई कानून न तोड़ा हो तो भी पुलिस का कहना नहीं मानना अपने आप में गैर-कानूनी काम है!"

इस अखबार को हम अधिक संख्या में छापना चाहते हैं ताकि बड़ी तादाद में मजदूर इसे पढ़ें और यह अखबार भी अनुभवों तथा विचारों के आदान-प्रदान के लिये एक मंच बने। रुपये-पैसे की कमी हमारे लिये एक बाधा है। अगर आप इस अखबार को उपयोगी समझते हैं तो कृपया आर्थिक योगदान भी दें।

पहचान की राजनीति

अपनी मर्जी से तो मज़हब भी नहीं उसने चुना था
उसका मज़हब था जो माँ बाप से ही उसने विरासत में लिया था
अपने माँ बाप चुने कोई ये मुमकिन ही कहाँ है
और ये मुल्क भी लाज़िम था, कि माँ बाप का घर था इसमें
ये वतन उसका चुनाव तो नहीं था।
वो तो कुल नौ ही बरस का था उसे क्यूं चुनकर
फ़िरकादाराना फ़सादात ने कल कत्ल किया...

परेशानियों का हल तलाशना एक सहज, सामान्य बात है। हम सब अपनी समस्याओं के समाधान के प्रयास करते हैं। लेकिन कुछ समय से यह अधिकाधिक देखने में आ रहा है कि समस्याओं के समाधान के लिये मनुष्यों द्वारा उठाये कदम उनके समाधान की बजाय परेशानियों को बढाते ही हैं। इस सिलसिले में यहाँ हम पहचान की राजनीति को थोड़ा कुरेद कर देखेंगे।

"मैं कौन हूँ?" के दार्शनिक प्रश्न की चर्चा से इस सन्दर्भ में हमारा कोई वास्ता नहीं पड़ेगा। "मैं कौन हूँ, तू कौन है" का सम्बन्ध पहचान की राजनीति में मेरी-तेरी भाषा, धर्म, जाति, वतन-देश, कबीला, क्षेत्र, विचारधारा, पार्टी-संगठन आदि से है। इस प्रकार की अधिकतर पहचानें हमें विरासत में मिलती हैं और कुछ पहचानों की सृष्टि में हम स्वयं भागीदार होते हैं।

आमतौर पर हमारे रोजमर्रा के जीवन में विरासत में मिली तथा नव-सृजत पहचानें समस्याओं के समाधान में हमारी शक्ति बढाती हैं। रोजमर्रा के मेरे-तेरे किस्म के टकराव अक्सर मोहल्ले में या कार्यस्थल पर हमारे अपने जैसों से होते हैं। पानी के नल पर तू-तड़ाक होने पर मोहल्ले में अपनी जाति के लोग हमारे स्वाभाविक सहयोगी बनते हैं। बच्चों के दाखिले अथवा नौकरी के लिये पार्टी-संगठन वाले हमारे सहज सहायक होते हैं। ऐसी चर्चा को हम सब जितना चाहें खींच सकते हैं। अक्सर होता भी है कि अपनी पहचान के चुनिन्दा लोगों में हम अपने पक्ष की घटनाओं का बढा-चढा कर बखान करते हैं और भिन्न पहचान वालों की कमीनी हरकतों की भर्त्सना व उनकी बेवकूफियों की खिल्ली उड़ाने में खूब रस लेते हैं। हिन्दू झुन्ड मुसलमानों की ऐसी-तैसी करता है तो चमार यादवों की खाट खड़ी करते हैं। हिन्दी वाले मद्रासियों की कुड़-कुड़ के किस्सों पर पेट थाम कर हँसते हैं तो पंजाबी और पूरबिये एक-दूसरे की हेयर स्टाइल पर हँसते हैं। नागा कूकियों की कायरता के किस्से बखान करते हैं तो जर्मन अंग्रेजों की पीठ में छुरा मारने की हरकतों को नोन-तेल लगा कर पेश करते हैं।

देखा गया है कि पर-पीड़ा से आनन्द उठाने का रोग खुद दर्द के बोझ से दबे जा रहे लोग एक आसान राहत के लिये पालते हैं। यह सब जब तक छुट-पुट रहता है तब तक अमानवीय-क्रूर होते हुये भी कोई बहुत ज्यादा चिंतित होने का कारण नहीं बनता। लेकिन परेशानियों के बढने की स्थिति में पहचान की राजनीति द्वारा गोलबन्द किये जाने पर हमारे यह पूर्वाग्रह जानलेवा बन जाते हैं। उदाहरण के लिए :

– लोगों की बढ़ती परेशानियों से उपजते असंतोष को नियंत्रण में रखने में असफल होने पर बिखरता युगोस्लाविया सर्बों, क्रोएटों और मुसलमानों के पूर्वाग्रहों के रहते पहचानों की राजनीति की चपेट में आ कर ऐसा नासूर बन गया है कि रक्त का नाला सतत चौड़ा होता जा रहा है।

– लेबनान में पदों की बन्दरबाँट कर पहचान की राजनीति द्वारा बोये बबूल के पेड़ विभिन्न पहचानों के हथियारबन्द दस्तों के रूप में फल-फूल कर जीवन के क्षण-भंगुर होने की तसदीक कर रहे हैं।

– रवान्डा में कबीलों की पहचान की राजनीति साधारण हथियारों से कत्ल के नये रिकार्ड स्थापित कर रही है।

– भारतीय उपमहाद्वीप में हिन्दू - मुसलमान की पहचान की राजनीति इन 50 सालों में ही लाखों लोगों का खून बहा चुकी है और करोड़ों को रिफ्यूजी बना चुकी है।

– भारत में नागा - कूकी के नाम पर हाल के सामुहिक कत्ल हों चाहे हिन्दू - सिख के नाम पर खून-खराबा हो या फिर भाषा, जाति और क्षेत्र के आधार पर खूनी तांडव हों, लोगों की बढ़ती परेशानियों के साथ पहचानों की राजनीति लोगों को जिन्दा जलाने से ले कर भीड़ भरी जगहों पर ऑटोमेटिक हथियारों से लाशें बिछाने की राह पर बढ़ रही है।

– पाकिस्तान में पहचान की राजनीति के इर्द-गिर्द बने हथियारबन्द गिरोह भारत में अपने हमजोलियों से इक्कीस ही हैं।

देशों के अन्दर जहाँ पहचान की राजनीति लगातार सैंकड़ों-हजारों को मौत की नींद सुलाती है वहीं देशों के आधार पर पहचान की राजनीति झटकों में लाखों-करोड़ों का कत्ल लिये है :

– जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रान्स के नामों पर जहर उगलती पहचान की राजनीति ने 1914–19 में ढाई करोड़ लोगों को मौत के घाट उतारा। 1939–45 में ऐसी राजनीति ने पाँच करोड़ लाशों से जमीन को पाटा।

– देशों के आधार पर पहचान की राजनीति 1945 के बाद भारत-पाकिस्तान, अमरीका-कोरिया, फ्रान्स-वियतनाम, अमरीका-वियतनाम, फ्रान्स-अल्जीरिया, भारत-चीन, वियतनाम-कम्बोडिया, आदि-आदि युद्धों में लाखों कत्लों में फलीभूत हुई है।

उबाऊ की हद तक बना इन्सानों के कत्लों का यह बयान हमारी परेशानियों के समाधान की उस राह की उपज है जो हमें रोजमर्रा के अपने झमेलों में सहायता करती लगती है। वास्तव में पहचान की राजनीति उँगली बचाने के लिये हाथ कटाने की राह है।

हमारा प्रत्यक्ष व सीमित अनुभव हमें परेशानियों के सरल समाधान के लिये विभिन्न पहचानों को अपनाने की ओर धकेलता है लेकिन ऐसे समाधान ही बारम्बार हमारे लिये जानलेवा साबित हो रहे हैं। ऐसे में अपनी बढ़ती परेशानियाँ दूर करने के लिये नई राह के प्रश्न पर विचार करना क्या हमारे अस्तित्व के लिये जरूरी नहीं हो गया है?

शहर में आदमी कोई भी नहीं क़त्ल हुआ
नाम थे लोगों के जो क़त्ल हुये
सर नहीं काटा किसी ने भी कहीं पर कोई
लोगों ने टोपियाँ काटीं थीं, कि जिनमें सर थे
और ये बहता हुआ सुर्ख लहू है जो सड़क पर
सिर्फ आवाजें-ज़बा करते हुये खून गिरा था

(दोनों कवितायें गुलज़ार की हैं।)

तबाही दर तबाही

रोटी के लिये दर-दर की ठोकरें खाते लोगों की दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती संख्या को अचानक एक के बाद दूसरे अजनबी माहौलों की ही दिक्कत नहीं उठानी पड़ रही बल्कि रोटी की तलाश में भटक रहे लोगों के सिर पर मौत अधिकाधिक मंडराने लगी है। जर्मनी में तुर्की से रोटी की तलाश में पहुँचे लोगों पर जानलेवा हमले बढ रहे हैं; जापान में अन्य देशों से पहुँचे मजदूरों पर आक्रमण बढ रहे हैं।

असम में रोटी की तलाश में इधर-उधर से आ रहे लोग और असम में जन्मे रोटी के लिये दर-दर की खाक छान रहे लोग पहचान की राजनीति के दुश्चक्र में फंस कर एक-दूसरे के खून के प्यासे हो रहे हैं। भूख तो थी ही संग, जान को खतरा भी साथ आन लगा है।

20 जुलाई को बारपेटा जिले में मुस्लिम पहचान की राजनीति करने वाले असम के मन्त्री के उकसावे पर रिफ्यूजी मुसलमानों के झुन्डों ने बोडो गाँवों पर हमले शुरू किये और बोडो पहचान की राजनीति करने वालों के भड़काने पर बोडो झुन्डों ने रिफ्यूजी मुसलमान बस्तियों पर हमले शुरू किये। पहचान की दलदल में हाथ-पैर मारने के साथ और धँसते जाने के सिलसिले में 23 जुलाई की रात दो-ढाई बजे हथियारबन्द गिरोह के नेतृत्व में 250–300 बोडो लेबल वाले लोगों ने बन्सारी रिलीफ कैम्प पर हमला करके मुस्लिम लेबल वाले 50 लोग गोली- खंजर-आग से मार दिये और 100 घायल कर दिये।

इस अखबार के काम में हाथ बँटाने के लिये, अखबार के विस्तार के लिये आप इनमें से कोई एक या कई अथवा सब काम कर सकते हैं :

– अखबार की सामग्री पर राय देना।

– अखबार में छपने के लिये सामग्री जुटाना।

– अखबार बाँटने में हिस्सा लेना।

– अखबार पर खर्च के लिये रुपये-पैसे देना।

फरीदाबाद में मजदूरों के सामूहिक कदम

★ 14/6 मथुरा रोड़ स्थित **मीनाक्षी डाइँ: एन्ड प्रिंटिंग** फैक्ट्री में प्रिंटिंग मास्टर, असिस्टेंट प्रिंटिंग मास्टर और सुपरवाइजर ही कम्पनी के इम्पलाई हैं। प्रिंटिंग के चार खातों में 22 टेबलों पर 6 ठेकेदारों के 40 वरकर 55 और 60 रुपये की ध्याड़ी में 12 घन्टे काम करते हैं। अन्य ठेकेदारों के धुलाई और कलर वाले 10 वरकर हैं जो 30 रुपये में 12 घन्टे काम करते हैं। आजकल फैक्ट्री में 12 घन्टे ही काम होता है। मजदूर 14-15 से 25-26 साल की उमर के हैं।

मीनाक्षी डाइँग एन्ड प्रिंटिंग में असिस्टेंट प्रिंटिंग ास्टर शेषनाथ द्वारा मजदूरों और ठेकेदारों के साथ गाली-गलौज व मार-पीट आम बात रही है। मिस्टर शेषनाथ जूता उतार कर मजदूरों को मारता रहा है। 8 जुलाई को फिर ने 2 वरकरों और 2 ठेकेदारों को मारा।

रोज-रोज की गाली-गलौज व मार-पीट के खिलाफ वरकरों और ठेकेदारों ने कदम उठाये। 9 जुलाई को सुबह मीनाक्षी डाइँग एन्ड प्रिंटिंग के मजदूरों ने हड़ताल कर दी और फैक्ट्री गेट के पास इक्ट्ठे हो गये तथा ठेकेदार फैक्ट्री नहीं पहुँचे। दस भी नहीं बजे थे कि मीनाक्षी मैनेजमेंट बात करने के लिये मजदूरों को बुलावे देने लगी।

★ एस्कोर्ट्स ग्रुप के **फोर्ड प्ला** में ओवरस्टे के बदले में कम्पेनसेट्री लीव का प्रावधान था। वरकर चाहे तो ओवरस्टे के पैसे ले सकता था और चाहे तो बदले में छुट्टी। (ओवरटाइम को ओवरस्टे का नया नाम दे कर एस्कोर्ट्स मैनेजमेंट कुछ समय से डबल की बजाय सिंगल रेट से ओवरटाइम के लिये पेमेन्ट करती है। शब्दाडम्बर और कानूनी भूल-भुलैया के संगम में एस्कोर्ट्स मजदूरों के पैसे डूब जाते हैं।)

हाल की एग्रीमेंट द्वारा मैनेजमेंट ने 50% ओवरटाइम-ओवरस्टे को सिंगल रेट से कैश कराना कम्पलसरी कर दिया है और मजदूर 50% ओटी-ओस्टे की ही कम्पेनसेट्री लीव ले सकता है। मैनेजमेंट ने यह शर्त भी लगा दी है कि जब-जब 4 घंटे की ओटी-ओस्टे होगी उसे सिंगल रेट से कैश कराना अनिवार्य होगा, उसके बदले में छुट्टी नहीं दी जायेगी।

कम पैसे में ज्यादा काम करवाने के मैनेजमेंट के इस प्रयास का फोर्ड वरकरों ने विरोध किया और कहा कि हम ओटी-ओस्टे के बदले में अपनी मर्जी अनुसार छुट्टी लेना या कैश करवाना जारी रखेंगे।

कम पैसे में ज्यादा काम करवाने के लिये मैनेजमेंट ने 30.4.94 की एग्रीमेंट में सालाना छुट्टियों पर भी नई शर्तें लगाई हैं। वार्षिक 21 छुट्टियों में से एल टी ए के लिये अनिवार्य 4 छुट्टियों के लिये ही वरकर को एफिशियेन्सी के अन्तर्गत दी जाने वाली राशि दी जायेगी। जो मजदूर अपनी बाकी 17 सालाना छुट्टियाँ लेगा उसे मैनेजमेंट एफिशियेन्सी वाली राशि नहीं देगी।

पहले एल टी ए के लिये कम कम 4 छुट्टियाँ लेना अनिवार्य था। अब एस्कोर्ट्स में जो मजदूर 4 से ज्यादा छुट्टी लेगा उसे आर्थिक नुकसान उठाना पड़ेगा। मैनेजमेंट चाहती है कि वरकर साल में 4 ही छुट्टी लें और बाकी 17 छुट्टियों में काम करें तथा उन 17 छुट्टियों को सिंगल रेट से कैश करायें।

1989 में मिनी एग्रीमेंट द्वारा मैनेजमेंट ने वर्क लोड वृद्धि के एवज में वार्षिक छुट्टियाँ 15 से 21 कर दी थी। छुट्टियों पर हमले, वार्षिक छुट्टियों को वास्तव में 4 छुट्टियाँ करने की मैनेजमेंट की स्कीम के विरोध में फोर्ड मजदूरों ने 1989 से पहले की स्थिति में लौटने की बात की।

मैनेजमेंट द्वारा कम्पेनसेट्री लीव और वार्षिक छुट्टियों के मामलों में मजदूरों की अनसुनी करने पर फोर्ड वरकरों ने सामुहिक कदम उठाया। 22 जून से फोर्ड मजदूरों ने ओटी-ओवरस्टे बन्द कर दिया।

26/6 को वीकली रैस्ट के दिन मैनेजमेंट ने वरकरों को काम करने को कहा। बहुत ही कम मजदूर फैक्ट्री पहुँचे और जो पहुँचे थे वे भी वापस चले गये। इस पर मैनेजमेंट ने जो वरकर आए थे उनमें से 4 को यह आरोप लगा कर सस्पैन्ड कर दिया कि उन्होंने मजदूरों को भड़काया था। घरेलू जाँच कार्रवाई। प्रोडक्शन पर असर। माहौल देख कर मैनेजमेंट ने लीपापोती के बाद उन 4 को ड्यूटी पर ले लिया।

फोर्ड वरकरों ने ओटी-ओस्टे काम बन्द रखा।

3 जुलाई के वीकली रैस्ट के दिन फैक्ट्री चलाने के लिये मैनेजमेंट ने गाड़ियों में कुछ लोगों को वरकरों के घरों तक भेजा पर फोर्ड प्लान्ट के 1600 परमानेन्ट मजदूरों में से 18-19 को ही मैनेजमेंट फैक्ट्री में ला सकी।

हाल की एग्रीमेंट अनुसार बढ़ा प्रोडक्शन 3 महीने देने के बाद ही बढ़े पैसे देने की शर्त मैनेजमेंट ने रखी थी। फोर्ड वरकरों ने बढ़ा हुआ प्रोडक्शन दिया। पहली जुलाई को फोर्ड में स्टाफ को अप्रैल-जून का एरियर मैनेजमेंट ने तनखा के साथ दिया। लेकिन 7 जुलाई को मैनेजमेंट ने ई में क्शन कार्य कर रहे वरकरों को तनखा के साथ एरियर नहीं दिया बल्कि मजदूरों में फूट डालने के लिये प्रोडक्शन के अलावा के कार्य करने वाले वरकरों को एरियर दे दिया।

इतना ही नहीं, फोर्ड मजदूरों द्वारा ओटी-ओवरस्टे नहीं करने पर अड़े रहने पर मैनेजमेंट ने तरह-तरह के आरोप लगा कर मजदूरों को नये सिरे से सस्पैन्ड करना शुरू कर दिया। 13 जुलाई तक मैनेजमेंट ने 9 फोर्ड वरकरों को सस्पैन्ड कर दिया था।

फोर्ड ट्रैक्टरों का दैनिक प्रोडक्शन 60-80 के रेंज से 16-18 ट्रैक्टर प्रतिदिन पर आ गया।

★ **झालानी टूल्स प्लान्ट**-II के चार वरकरों ने रिटायरमेन्ट पर मैनेजमेंट से अपना हिसाब माँगा। इस पर पहली जुलाई को सुबह परसनल अफसर ने उन्हें गेट बाहर जाने और 6 महीने बाद आ कर हिसाब ले जाने को कहा। रिटायर मजदूरों द्वारा हिसाब लेने पर जोर देने पर परसनल अफसर ने कहा कि वे कोई स्पेशल लोग नहीं हैं और जैसे रिटायर होने पर अन्य वरकरों को हिसाब दिया जा रहा है वैसे ही उन्हें भी दिया जायेगा।

गर्मा-गर्मी हुई और झालानी टूल्स सैकेन्ड प्लान्ट के 4 रिटायर मजदूरों ने परसनल अफसर को घेर लिया। धक्का-मुक्की हुई। सैकेन्ड प्लान्ट के वरकरों ने रिटायर मजदूरों के समर्थन में काम बन्द कर दिया और उन्हें तत्काल हिसाब देने के लिये आवाज बुलन्द की। सैकेन्ड शिफ्ट में भी मजदूरों ने काम बन्द रखा। पहली जुलाई को झालानी टूल्स के सैकेन्ड प्लान्ट में थर्ड शिफ्ट में भी मजदूरों ने रिटायर वरकरों के समर्थन में चक्का जाम रखा। 2 जुलाई को सुबह की शिफ्ट में भी काम बन्द और नाइट शिफ्ट वाले वरकर प्लान्ट में ही रुके रहे।

मैनेजमेंट ने रिटायर वरकरों की पुलिस से शिकायत की पर प्लान्ट में मजदूरों के तेवर देख कर पुलिस चुप रही।

झालानी टूल्स मैनेजमेंट द्वारा सैकेन्ड प्लान्ट में बैठे 4 रिटायर वरकरों को हिसाब देने के बाद ही 2 जुलाई को दोपहर बाद सैकेन्ड प्लान्ट में मजदूरों ने काम शुरू किया।

फैक्ट्रियों में तथा बस्तियों में सामुहिक कदमों की जानकारी को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँचाना हमारे लिये खुशी का काम है। अगर आपके पास ऐसी जानकारी है तो वह हमें दें।

★ बुढ़िया नाले के पास स्थित **महर्षि आयुर्वेद** कारपोरेशन में मजदूरों पर पुनः नियन्त्रण स्थापित करने के लिये मैनेजमेंट सस्पैन्ड किये वरकरों को न तो ड्यूटी पर ले रही है और न ही इनक्वायरी कर रही है।

★ 14/2 मथुरा रोड़ पर स्थित **विक्टर केबल्स** पर काले झन्डे लगे हैं।

जो चाहते हैं कि यह अखबार ज्यादा लोग पढ़ें, ऐसे 150 मजदूर अगर हर महीने दस-दस रुपये दें तो इस अखबार की पाँच हजार की जगह दस हजार प्रतियाँ फ्री बँट सकेंगी।

19 अगस्त को सुबह दस बजे, 20 को शाम 5 बजे और 21 अगस्त को रात 8 बजे इस अखबार के जुलाई अंक पर मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी में चर्चा होगी। हर कोई इसमें भाग ले सकता है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० ऑफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। RN 42233 **पोस्टल रजिस्ट्रेशन** L/HR/FBD/73
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी – 548 नेहरू ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।